मेरा वतन

पं. नवीन जोशी

जो दुनिया से निराला है,
ये भारत है वतन मेरा।
तू चाँद-सा आबाद रहे,
हँसता रहे सदा ये चमन मेरा॥

अ- मेरे वतन,अ-प्यारे वतन, ये रूप तेरा अनोखा है,
खड़ा रहे तू, खिला रहे तू, तेरे सिवा सब धोखा है।

मेरा मीत है तू,गीत है तू, सदा तुझको ही गाता रहूं,
तेरी आन की खातिर, शान की खातिर, रक्त मैं बहाता रहूं॥

तेरे आँचल में मुस्काऊं,
तेरी गोदी में मिट जाऊं,
बस इतना है मुझे करना।

तेरी मिट्टी में खिल जाऊं,
तेरी सासों में घुल जाऊं,
बस इतना है मुझे करना।

मैं कितना सुंदर, प्यार का एक समन्दर, ये बहन मेरी कहती है,
अब फीका है,नूर चाँद का, दूर वो मुझसे रहती है।
ओ-मेरे दिल की कली, सुन तो सही, बाहें अपनी खोले रख,
मैं आऊंगा, मैं आऊंगा, ये दिल को अपने बोले रख॥

तेरे आँचल में मुस्काऊं,
तेरी गोदी में मिट जाऊं,
बस इतना है मुझे करना।

तेरी मिट्टी में खिल जाऊं,

तेरी सासों में घुल जाऊं,
बस इतना है मुझे करना॥

अ–मात मेरी, सुन बात मेरी, क्यूँ जानकर अनजान बनी,
तू कहती थी ,मैं हँसता रहूं ,फिर क्यों खुद तू वीरान बनी?
रे–मेरे पिता, हो क्यूँ मुझसे खफा,क्यूँ कमी मेरी खलती है?
जब माँ हो संकट में, तब संतान की सूरत रंग बदलती है।

तेरे आँचल में मुस्काऊ,
तेरी गोदी में मिट जाऊ,
बस इतना है मुझे करना।

तेरी मिट्टी में खिल जाऊं,
तेरी सासों में घुल जाऊं,
बस इतना है मुझे करना

शोध छात्र,
पद्मश्री नारायणदास रामानन्ददर्शन अध्ययन एवं शोध संस्थान,
जयपुर